वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १६ अंक ४ अप्रैल २०१६

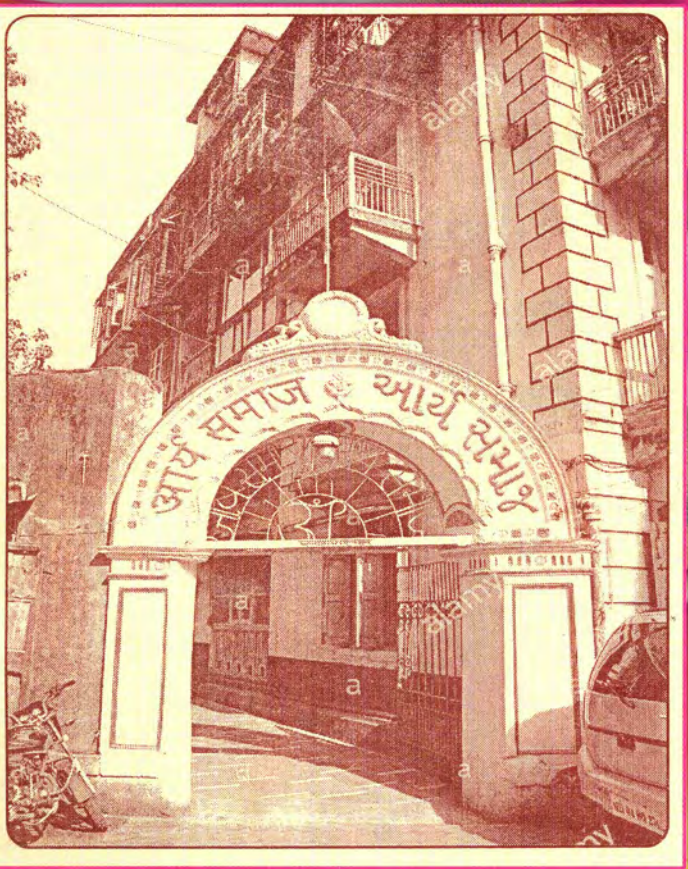

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा
इ.स. १८७५ में स्थापित विश्व की प्रथम
आर्य समाज, काकडवाडी, मुंबई (प्रवेशद्वार)

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवं ऋषिबोधदिवस

इन्दौर के दयानन्द जन्मोत्सव पर लोकसभाध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन को म.दयानन्द का चित्र एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए आर्यजन ।

परली में ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर मार्गदर्शन करते हुए महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी ।

बोधोत्सव के मुख्य वक्ता श्री लक्ष्मणरावजी आर्य का उद्‌बोधन । मंच पर हैं उग्रसेनजी राठौर, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, विज्ञानमुनिजी व अमृतमुनिजी ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ कलि संवत् ५११७ विक्रम संवत् २०७३

दयानन्दाब्द १९३ चैत्र अप्रैल २०१६

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के. देशपांडे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२२९५५४५)	(९४२१९५१९०४)	(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय..४
२) ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह-धन्यवाद ज्ञापन.............५
३) सृष्टि नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस...........६
४) ब्रह्मकुमारी मत-संस्कृति व धर्म का विनाशक............११
५) गुरूकुल स्नातिका आर्य महिला गौरव स्थिरनिधि..........१६
६) स्वाधीनता सैनिक कृतज्ञता स्थिरनिधि......................१७
७) समाचार दर्पण...१८

मराठी विभाग

१) सुभाषित संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी.........................२१
२) गुढीपाडवा, आर्य समाज- परिवर्तन पर्वाचा युगारंभ.........२२
३) वैचारिक प्रदूषणावर प्रभावी उपाय-वैदिक विचार -.........२४
४) वार्ता विशेष..२६
५) शोक वार्ता...३१

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००/-
आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

सम्पादकीयम्

जलसंकट -एक चुनौती

बहुत पहले से ही मानवसमूह अनेकों प्राकृतिक आपदाओं से जुझता आ रहा है । इनमें से बहुत सारी आपदायें तो मनुष्य के ही कर्मों की देन हैं । भौतिक सुख-सुविधाओं को जुटाते हुए मानव आज इतना स्वार्थी बन गया है कि उसने प्रकृति के विरूद्ध आचरण करते हुए उसके नियमों को ही तोड डाला है । इसके भयावह दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं कि समग्र प्राणिसमूह का जीना हराम हो चुका है ।

आज भारत के कईं राज्यों में पानी की समस्या ने उग्र रूप धारण किया है। वर्षा न होने से भूमि का पानी लगभग खतम हो चुका है । जलस्तर घटने से आज पानी के लिये लोग तरस रहे हैं । विशेषतः महाराष्ट्र के मराठवाडा इलाके में गत १०-१५ सालों से बारिश का प्रमाण घट चुका हैं, परिणामस्वरूप लातूर जैसे नगर व अन्य देहातों के लोग बुरी तरह से परेशान हैं । पानी नहीं, तो जिये कैसे ? संघर्ष जारी है, तो पानी के लिए ही ! वर्षा के अभाव से अकालसदृश्य स्थिति व जलसमस्या का प्रादुर्भाव...यह कोई आकस्मिक दैवी आपदा नहीं है । इस संकट की शुरूआत कई वर्षों से हो चुकी है । जिस मराठवाडा विभाग में जलसंकट गहरा हो चुका है, वहां पर बडे-बडे कारखानों व चीनी (शक्कर) फॅक्टरियों के निर्माण करने से धन जुटाने का काम तो हो गया, परंतु उससे पानी का संकट अधिक बढता गया । यहांपर जलसिंचाई प्रकल्पों का कार्य कम हुआ । पानी के व्यवस्थापन में राजनेताओं द्वारा विशेष प्रयास नहीं हुए । सरकार ने भी ग्रामसंस्कृति या कृषिव्यवसाय का बढाने के स्थान पर शहरीकरण को अग्रक्रम दिया है । बडे-बडे उद्योगों व कारखानों का निर्माण करते समय परंपरागत कृषि, वृक्षसंवर्धन, सादगीपूर्ण जीवन, चरित्र निर्माण आदि प्रयत्न नहीं हुए और ग्रामोदय जैसी संकल्पना को कुचला गया । गांवों व जंगलों को उजाडकर शहरों को बसाने में सारी शक्ति लगा दी गयी । फिर शहरों में रहनेवालों की लाईफस्टाईल और देहाती लोगों की जीवनशैली इसमें जमीन-आसमान का भेद है । गांव में पानी कम लगता है, तो शहरों कईं गुना अधिक ! एक व्यक्ति को गांव में जितना पानी लगता हैं, उससे चौगुना नगरनिवासी के लिए लगता हैं । इससे देहातों के तालाब व नदियों का पानी शहर की ओर ले जाया गया । परिणामस्वरूप ग्रामवासियों के लिए न तो खेती के लिये पानी बचा और नहीं पीने के लिये ! इस संकट से निपटने के लिये सामूहिक प्रयत्नों की आवश्यकता हैं ।

जल ही जीवन हैं । आपो भवन्तु पीतये । - नयनकुमार आचार्य

१६ आर्य विभूतियों का ऐतिहासिक गौरव सुसंपन्न

प्रान्तीय सभाद्वारा धन्यवाद ज्ञापन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज, गान्धी चौक, लातूर के पूर्ण सहयोग से ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव समिति द्वारा दि. २६ मार्च २०१६ को आर्य समाज की १६ महान् विभूतियों का गौरव समारोह हर्षोल्हासपूर्वक सम्पन्न हुआ। लातूर के गान्धी चौक आर्य समाज में आयोजित यह गौरव समारोह काफी सफल रहा। गौरवमूर्तियो के साथ उनके परिवार के सदस्य, सम्बन्धी, मित्रजन आदि सभी में नया उत्साह नजर आया। इस ऐतिहासिक गौरव व समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के तपस्वी सन्यासी, सन्त सुधारक व युवकों के नवनिर्माता पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती ने। जानेमाने विचारक, शिक्षाविद् तथा पूर्व सांसद डॉ. जनार्दनरावजी वाघमारे इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, इन्हीं के शुभकरकमलों से गौरवमूर्तियों का सम्मान किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूपमें वैदिक विद्वान डॉ. दीनदयालजी वेदालंकार, आर्य भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य आदि उपस्थित रहें।

उन-उन स्थानों की आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने गौरवमूर्तियों के सम्मान में गौरवनिधि संकलित की थी। हर एक की गौरवनिधि कमसे कम एक लाख रूपयों की और अधिक से अधिक पांच लाख की थी। गौरवमूर्तियों को उनकी भेंटराशि, अभिनन्दन पत्र, गौरवचिह्न, शॉल, पुष्पहार, श्रीफल प्रधान कर सम्मानित किया गया।

दिवंगत आर्य विभूतियों का गौरव उनके पुत्र-कन्या आदि सम्बन्धियों ने स्वीकारा तथा जीवित वयोवृद्ध आर्यसेवकों का गौरव ग्रहण करने के लिए वे स्वयं ही अपने परिवार के साथ उपस्थित रहें। सम्पूर्ण समारोह योजनाबद्ध रीतिसे व सुव्यवस्थितारूपेण सम्पन्न हुआ। समारोह में दर्शक श्रोता गण भारी संख्या में सम्मिलित हुए। प्रमुख अतिथि डॉ.वाघमारेजी के प्रभावशाली विचार भी सभी को सुनने मिले! महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा सभी के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करती हैं। सभा उन-उन आर्य समाजों की आभारी हैं। विशेषकर आर्यसमाज गांधी चौक के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों के धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने पानी की समस्या होते हुए भी इस समारोह का आयोजिन किया! गौरवमूर्तियों के परिवारजनों व आर्यसमाजों के भी मनःपूर्वक धन्यवाद! **(समारोह का सचित्र विस्तृत विवरण अगले अंक में)**

प्रधान, मंत्री व पदाधिकारी-म.आ.प्र.सभा

सृष्टि नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

– डॉ. मंजुलता विद्यार्थी (मदनसुरे)
(प्रधान, आर्य समाज अकोला)

संवत्सर का प्रारम्भ आदि सृष्टि में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन, प्रतिपदा को प्रथम सूर्योदय होने पर हुआ था । इस वर्ष गुढीपाडवा अर्थात् सृष्टि संवत् की आयु चैत्रमास की प्रतिपदा को १ अरब, ९६ करोड,०८ लाख, ५३ हजार, ११७ वर्ष हो गये हैं । नूतन वर्ष के स्वागतार्थ आर्य संस्कृति में आनन्दानुभव के साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठानपूर्वक उत्सव मनाने की परिपाठी शुरू से रही है । ऋग्वेद की ऋचा है –

ऋतं च सत्यं चाभीद्धातपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततःसमुदोऽअर्णवः ।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतोवशी।

इसमें सृष्टि उत्पत्ति का क्रम देते हुए बताया गया है कि सर्वप्रथम ऋत और सत्य नामक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नियमों का प्रादुर्भाव हुआ । फिर मूल प्रकृति में विकृति हो कर अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने के पश्चात् विश्व के कर्त्ता ने अहोरात्रों (दिन–रात) को करते हुए संवत्सर को बनाया ।

वेदोपदेश द्वारा इस संवत्सर के आरम्भ की कल्पना का ज्ञान सर्वप्रथम मन्त्रदृष्टा ऋषियों को हुआ । उन्होंने जान लिया कि प्रत्येक सृष्टि, कल्प के आदि में यथानियम होते हैं । उन्होंने यह भी जाना कि इतने अहोरात्रों (दिन–रात) के पश्चात् आज के दिन नव–संवत्सर के आरम्भ का नियम है, उसी के अनुसार प्रतिवर्ष संवत्सराम्भ होकर वर्ष, मास और अहोरात्र की कालगणना संसार में प्रचलित हुई ।

इस प्रकार सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ । सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाया था और फिर वही ज्योतिष में चान्द्रकाल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा था । ज्योतिष के हिमाद्रिग्रंथ में भी एक श्लोक आया है –

चैत्रमासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की । प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भाष्कराचार्य कृत **सिद्धान्त शिरोमणि** में भी आया है– चैत्रमास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि एक साथ आरम्भ हुए । आगे चलकर इस पूर्व परम्परा के अनुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही आरम्भ होते हैं ।

विक्रमी संवत् २०७२ से अब २०७३ हो रहा है । सृष्टि की उत्पत्ति,

कालगणना का शुभारम्भ इस दिन से ही हुआ है । इसके साथ ही श्रीराम का राज्यारोहण, महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, महाराज विक्रमादित्य का विजयोत्सव भी इसी दिन किया गया । ऋषि दयानंद ने चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही विक्रमी संवत् १९३२ में तदनुसार इ.स. १८७५ में गिरगांव मुंबई में पारसी डॉ. मानकजी अदेर के उद्यान में आर्यसमाज की स्थापना की स्थापना की । समाज के सिद्धान्तों और विधान को २८ नियमों मे आबद्ध किया गया । प्रारम्भ में ही महादेव गोविंद रानडे, गोपालराव हरि देशमुख, सेवकलाल, कृष्णदास, गिरधरलाल दयालदास कोठारी आदि कई प्रतिष्ठित पुरूष आर्यसमाज के सदस्य बनें । मुम्बई के अनन्तर १८७७ इ.स. में लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई । यहाँ रायबहादुर मूलराज तथा लाला साईदास जैसे कर्मठ सहयोगी ऋषि दयानंद को मिले । यहाँ आर्यसमाज के २८ नियमों को संक्षिप्त कर केवल १० नियम बनाये गये । ऋषि दयानंद के जीवन काल में ही आर्यसमाज का सार्वत्रिक प्रचार हुआ, देश के सभी भागों मे उसकी सैंकडों शाखाएँ स्थापित हुई और सहस्त्रों व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बनें । ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित यह आर्यसमाज का आन्दोलन उन्नसवी शतीका सबसे बडा आन्दोलन था । ऋषि दयानन्द वेदशास्त्रों के गंभीर विद्वान, महान सुधारक, राष्ट्रवादी, प्रगतिशील चिन्तक तथा श्रेष्ठ साहित्यकार थे । आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के नेताओं में उनका स्थान अद्वितीय है । सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, करूणाशीलता और अहंकारशून्यता आदि गुण उनके ओजस्वी व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे । वे अगाध गुणों के सागर थे और उनका कर्मक्षेत्र भी अगाध था ।

वेदों के सत्यस्वरूप के सम्बन्ध में छाया हुआ सघन अंधःकार और आर्यसाहित्य के सम्बन्ध में भारत की तथाकथित पंडित मंडली में व्यापक उपेक्षा और उनके साथ ही तांत्रिक तथा वाममार्गी मतों का प्राबल्य शूल बनकर ऋषि के हृदय को अत्यंत वेदना पहुँचाता था । मातृभूमि की दासता उन्हें अहर्निश अखरती थी, गौ वंश का ह्रास मानसिक पीडा पहुँचाता था । वे भारतवासियों की दरिद्र-दलित दशा से दुःखी थे । और दूसरी तरफ अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम स्वरूप भारतीयों का एक वर्ग पश्चिम की चकाचौंध की आंधी में बह रहा था ।

ऐसे समय में ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है** । रूढियों और अंधविश्वासों की जडों पर कुठाराघात कर राष्ट्र में जागृति का शंखनाद किया । विधर्मियों को शास्त्रार्थ

की चुनौती देकर उनके छक्के छुडाने के साथ आर्य धर्म की श्रेष्ठता ने भी उन्हें कायल बना दिया । उन्होंने प्रगति के नाम पर केवल भागने का नहीं, अपितु पीछे की ओर देखने का तथा भविष्य का पथ प्रशस्त करने का आवाहन किया । उन्होंने स्त्री शिक्षा, शिक्षा की गुरूकुल प्रणाली और देश की एक राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी में लिखित हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का युग प्रवर्तक घोष किया । उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ पाया । वे अपने समय के सबसे बडे समाज संस्कारक बने ।

आर्यसमाज की स्थापना उनका सबसे अन्यतम कार्य था । हजारों वर्षों से अज्ञानान्धकार में भटक रहे, राजनैतिक एवं मानसिक दासता के बन्धनों में जकडे, अवैदिक मत मतान्तरों एवं अंधविश्वासों से ग्रस्त आर्यावर्त्त को आज से लगभग १४१ वर्ष पूर्व (हमने अभी ऋषि दयानन्द का १९२ वां जन्मदिन मनाया है ।) आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द ने झकझोरा था और सहस्त्राब्दियों से कुंठिज , शोषित एवं अपमानित इस देश को राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्रान्ति के मार्ग पर ला कर खडा किया था । सन् १८७५ ई. स. में महर्षि द्वारा स्थापित **आर्यसमाज** समस्त बुराइयों के विरूद्ध एक बगावत एवं विद्रोह की आग बन कर फैल गया । और जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्र में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का अभ्युदय हुआ । साथ ही वैदिक गरिमा को पुनः प्राप्त करने की उदात्त महत्वाकांक्षा **'इन्द्रं वर्धन्तो असुरः अपघ्नन्तो अराव्णः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।' (ऋग्वेद)** के रूप में सुनाई पडी । इस नारे को साकार करने के लिए ही आर्यसमाज की नींव रखी गई । साथ ही इस पवित्र संस्था का उद्देश्य रखा गया कि **समस्त संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना ।**

किसी भी प्रकार की संकीर्णता अथवा सांप्रदायिकता, जातीयता अथवा कृत्रिम देशभक्ति का लेशमात्र भी न रखते हुए मानवमात्र के लिए इतना उदारतापूर्ण तथा इतना सर्वांगीण उद्देश्य शायद ही किसी अन्य संस्था के संस्थापक ने घोषित किया हो ! ऋषि दयानन्द ने सर्वत्र आर्य का अर्थ धर्मयुक्त गुणकर्म स्वभाव वाले, उत्तम गुण कर्म स्वभाववाले उत्तम जन इत्यादि किया है और इन्हीं के संगठन को **आर्यसमाज** की संज्ञा दी है । दयानन्द को अभीष्ट था कि **सत्पुरूष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बनें ।**

आर्यसमाज का प्रारंभिक स्वरूप बडा तेजस्वी था । वह एक सशक्त ज्वार के समान था, जिसने न केवल भारत को अपितु सुसंस्कृत विश्व को आप्लावित कर

आन्दोलित कर दिया था । अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक डॉक्टर एण्ड्रो जैक्सन डेविस ने आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप का जो चित्र खींचा है, वह बडा ही अनूठा है । उसको उसी रूप में प्रस्तुत करने का मैं लोभ संवरण नहीं कर पा रही हूँ । आर्यसमाज को उसने जिस रूप में देखा, उसका भाषान्तर इस प्रकार से है - 'मुझको एक आग दिखाई पडती है । जो सब जगह फैल रही है...। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों, अफ्रिका के बीहड जंगलों, एशिया की ऊँची पर्वत चोटियों और योरोप के महान राज्यों पर मुझे उसकी लपटें सुलगती हुई दिखाई दे रहीं हैं । इस अपरिमित आग को देखकर, जो निस्सन्देह राज्यों, साम्राज्यों और समस्त संसार की नीति तथा व्यवस्था के सब दोषों को भस्म कर डालेगी...मैं अत्यंत आनन्दित हो कर हर्षमय जीवन बिता रहा हूँ । असीम उन्नति की आशा-विद्युत से मनुष्य का हृदय चमक रहा है । वक्ताओं, कवियों और ग्रंथ निर्माताओं की शिक्षाओं में भी कभी-कभी उसकी चमक दीख जाती है । आर्यसमाज की भट्टी में यह आग सनातन पुरातन आर्यधर्म को स्वाभाविक पवित्र रूप में लाने के लिए सुलगाई गई है, भारत के एक परम योगी ऋषि दयानन्द के हृदय में यह आग प्रगट हुई थी । हिन्दू और मुसलमान उस प्रचण्ड आग को बुझाने के लिए चारों ओर से पूरे वेग के साथ दौडे । ईसाइयों ने एशिया की इस प्रचण्ड ज्योति को बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया । परन्तु ईश्वरीय ज्योति और भी अधिक प्रज्वलित हो चारों ओर फैल गई । संपूर्ण विरोध एवं विघ्न-बाधाओं की घटा इस आग के सामने न टिक सकी । रोग के स्थान में तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविश्वास के स्थान में विश्वास, द्वेष के स्थान में सद्भाव, बैर के स्थान में समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूतप्रेतों के स्थान में परमेश्वर एवं प्रकृति का राज्य हो जाएगा । मैं इस आग को परम मांगलिक मानता हूँ । जब यह आग सुन्दर भूतल पर नवजीवन का निर्माण करेगी ।'

यह है आर्यसमाज के उज्ज्वल स्वरूप की झलक ! आरम्भिक काल में आर्यसमाज के गरिमामय आन्दोलन का यही उद्दीप्त और उज्जवल स्वरूप था । उसका इतिहास भी कम गौरवमय नहीं है । भारतमाता के बन्धन को काटने का श्रेय आर्यसमाज को ही है ।

सर वैलेण्टाईन शिरोल ने सम्पूर्ण भारत का दौरा करने के बाद अपनी पुस्तक **अनरैस्ट इन इण्डिया** की अन्तिम पंक्तियों में यह रिपोर्ट लिखी थी कि, **जहाँ-जहाँ आर्य समाज हैं, वहां-वहां राजद्रोह प्रबल है** । महात्मा गांधी ने भी सत्याग्रह

परीक्षण के बाद यह घोषणा की थी कि 'जेलों में रह कर कष्ट सहनेवालों में ८०% आर्य समाजी हैं ।' इंग्लैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रैमजे मॅकडाल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्या से खडे गुरूकुल कांगडी का निरीक्षण करने के बाद ये महत्वपूर्ण बयान दिए थे कि पहाडों और नदी के बीच में स्थित उस गुरूकुल नाम की भूमि में बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि जिनमें से एक भी सरकार का नौकर बनने को तैयार नहीं होगा । माँ- बाप से बिलकुल अलग रख कर जिनको अलौकिक पाठ पढा करके आर्यसमाज का सच्चा मशिनरी बनाया जा रहा है, उनसे कदापि यह आशा नहीं की जा सकती कि वे किसी अत्याचार के आगे झुकेंगे ।

इतिहास बताता है कि, उस समय आर्यसमाज की धमनियों में अत्याचार, शोषण, पाखण्ड और अज्ञान को देखते ही खून खौलता था । एक अजीब उत्साह और उमंग उसके रग-रग में व्याप्त था । अज्ञान, अन्याय, अभाव, आलस्य रूपी दानवों को समाप्त करने के लिए वे अपना लाल-लान खून तक बहाने को तैयार रहते थे । श्रद्धानन्द, लेखराम, राजपाल जैसों का शानदार बलिदान आज भी हमें चुनौती दे रहा है । जिस समाज के मस्त दीवानों और परवानों ने अपने स्वार्थ को लात मार कर, नेता और क्रान्तिकारी बन कर, सेवक बन

कर, बलिदानी बन कर विश्व का कायाकल्प करने की भूमिका अदा की है, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना होगा ।

देश के राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता प्राप्ति के पुनीत कार्य में आर्यसमाज का सर्वोपरि योगदान रहा है । समाजसुधार के क्षेत्र में आर्यसमाज प्रमुख संस्था रही है । विवाहप्रथा में समुचित सुधार, वर्णाश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या, अस्पृश्यता-निवारण, नारी शिक्षा आदि क्षेत्रों में आर्यसमाज का कर्तृत्व श्लाघनीय रहा है । सुधार और संस्कार का कार्य वह आज भी जीवन्त रूप में कर रहा है । इतिहास ने स्वीकार किया है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज का संस्थागत योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान रहा है । आर्यसमाज ने मानवी विकास के सभी पहलुओं का स्पर्श किया है । राष्ट्रवाद और मानव जीवन के सभी अंगो का शुद्ध व उज्वल रूप आर्यसमाज को अन्य आन्दोलनों से बिलकुल अलग तथा महत्वपूर्ण बना देता है ।

ब्रह्माकुमारी मत - संस्कृति व धर्म का विनाशक

- आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा

यह ब्रह्माण्ड बडा विशाल है। इस विशाल ब्रह्माण्ड का शासक, प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला शिव (कल्याणकारक) ब्रह्मा, ओ३म् ईश्वर है। यह ब्रह्माण्ड का स्वामी सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्त,पाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। वह तो ओ३म् पदवाच्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, अजर, अमर, चेतन शिव= सुखदायक, शंकर= सुखकारक, आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्यसमाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया है।

पर वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, शंकर= सुखकारक आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं हैं। उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्माकुमारी मत भी है। ब्रह्माकुमारी मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बडी विचित्र धोखा देनेवाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की 'शिव और शिवरात्रि, घोरकलहयुग विनाश' पुस्तक एवं 'ओम शान्ति मीडिया' समाचार पत्र सामने रखे हैं। जिनमें इनकी शिव ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। 'घोरकलहयुग विनाश' पुस्तक के १२ वें पृष्ठ पर हिन्दू मतावलम्बियों को **बुतपरस्त हिन्दू** ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, कराँची वासी लेखराज हैं। जिन्हें ब्रह्माकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपदेश नहीं मानते, अपितु रामायण को उपन्यास एवं गीता को लेखराज का उपदेश मानते हैं। उनके अनुसार शिव यहुदियों का यहोवा है एवं मुहम्मद का अल्लाह शिव है। शिव और शिवरात्रि पुस्तक के ३६ वे पृष्ठ पर पंक्ति है - 'परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है।' और वह सर्वव्यापक नहीं है। इसी प्रकार पृ० ४२ पर पंक्ति है- 'मुहम्मद साहब ने शिव को

ही अल्लाह नाम दिया था । हाँ ! वे मूर्तिपूजा के विरूद्ध थे ।' इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्माकुमारी मत ईसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है ।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है, वह शिव और शिवरात्रि एवं ओम् शान्ति मीडिया के अनुसार यह है कि यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे, तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गतिवाला भी नहीं कहा जा सकता । शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है - शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है । इस प्रकार लेखराज द्वारा चलाये गये इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरूद्ध मान्यताएँ हैं ।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं । अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य ! वेदादि शास्त्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों वेदमन्त्र आते हैं । शिवपुराण आदि अन्य ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है । उदाहरणरूप वेद एवं उपनिषद के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है । उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुँचा हुआ है । वह मन के समान क्यों ? मन से भी तीव्र गतिवाला है । ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है-

अनेजदेकं मनसो जवीयो
नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत् ।

अर्थात् **एकम्** = अद्वितीय ईश्वर, **अनेजत्** = गति नहीं करता, वह अचल है, परन्तु **मनसः** = मन के वेग से भी, **जवीयः** = अति वेगवान है । और वह, **पूर्वम् अर्षत्** = पहले से ही सबसे देव ईश्वर को, **न आप्नुवन्** = प्राप्त नहीं करती ।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गतिवाला है, अचल है, अवतार एवं आनेजाने की विधियों से रहित है । सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है । उससे जगत् के तीनों लोकों का कण कण व्याप्त है । व्याप्त होकर के सृष्टि का पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है । सुख समृद्धि के साधनों को दे रहा है । ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता, तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थों का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया कर्म का साक्षी कैसे होता !

एवं कर्मफल का दाता और न्यायकारी कैसे बनता ? सुखों के साधनों को किस प्रकार देता ? अतः सिद्ध है वह सर्वव्यापक है ।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन धान्य, सोना चाँदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्प्रदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव = सुख का कारण, शंकर = सुखकारक ब्रह्म ईश्वर ही तो है । सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है । पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अननुमानित सम्पदा का आगार दीखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत् एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भण्डार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पडते ही प्रकाश दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चाँद, सितारे, सूर्य, चन्द्र आदि बडे बडे प्रकाशपुंज दीख पडते हैं ।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाडों को चीरकर लोग पति, धनपति बन रहे हैं, वृक्षों को कांट बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर बडे लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोडपति बन रहे हैं, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं । यह सब निराकार शिव, शंकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, अजर, अमर ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है ।

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन है, सबके लिए है । किसी एक व्यक्ति, क्षेत्र ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है ।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर, ईश्वर की इस वरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति भावों से नित्य सभी का मस्तक नम है । उन भक्ति भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं । उन भक्तिभावों का सूचक मन्त्र है–

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

(यजु. १६/४१)

इस मन्त्र में ३ बार **नमः** शब्द आया है । **नमः** शब्द २ प्रकार के हैं । जो णम प्रह्वत्वे शब्दे च धातु से असुन् एवं अच् प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः नमस्, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं । जिनके नमस्कार, सत्कार (नमस्यति परिचरणकर्मा, निघ. ३/५) वज्र, अन्न (नमः इति अन्न नाम, निघ. २/७ नमः इति वज्र नाम, निघ.२/२०), संगति, स्तुति (यज्ञो वै नमः, शत ब्रा.२/४/२/२४) आदि अर्थ हैं । जिनका प्रकारणानुसार सम्बन्ध होता है ।

यहाँ प्रकृत मन्त्र में प्रसंगतः **'नमः'** शब्द के स्तुति अर्थ की संगति होगी ।

इस यजुः मन्त्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय, शिवतराय ये ६ पद आये हैं । इन ६ पदों के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गम्भीर भाव अभिव्यक्त हैं ।

मन्त्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद शम्, मयस् ,शिव इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं । ये तीनों शब्द **शम् इति सुख नाम, मयः इति सुख नाम, शिवम् इति सुख नाम** (निघ. ३/६) सुख के वाचक हैं । आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन ३ भेदों से सुख भी ३ प्रकार का है । **शम्** शब्द वाच्य सुख **आध्यात्मिक = मोक्ष** का सुख है, मयस् शब्द वाच्य सुख **आधिदैविक** = देव, इन्द्रिय अर्थात मन, प्राण, १० इन्द्रियों एवं आत्मा का सुख है । शिवशब्द वाच्य सुख आधिभौतिक= सांसारिक, धन-धान्य, रूपया पैसा, सगे सम्बन्धी आदि का सुख है ।

शम् तथा मयस् उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में भू सत्तायाम् धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शम्भव, मयोभवाय शब्द सिद्ध होते हैं । जिनका चतुर्थी में शम्भवाय, मयोभवाय रूप बनता है । जिनका अर्थ होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न न करने वाले के लिए ।

शम् तथा मयस् उपपद रहते **डुकृञ् करणे** धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शंकर, मयस्कर शब्द निष्पन्न होते हैं । जिनका चतुर्थी में शंकराय, मयस्कराय प्रयोगरूप बनता है । जिनका अर्थ है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए ।

इसी प्रकार शिव शब्द से अतिशय अर्थ में तरप् प्रत्येक करके शिवतर शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में शिवतराय प्रयोग रूप बना है । जिसका अर्थ है- आध्यात्मिक = सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए ! प्रकृति सभी का कल्याण, सुख करती है, अतः शिव है । ईश्वर भी सबका कल्याण व सुख करता है, किन्तु प्रकृति से अतिशय रूप में करता है, अतः वह शिवतर है । इस प्रकार नमः शम्भवाय इस मन्त्र का अर्थ हुआ -

हे ईश्वर ! आप **शम्भवाय**= शम् आध्यात्मिक, मोक्ष सुख उत्पन्न करने वाले के लिए **च** = और **मयोभवाय** = आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करनेवाले के लिए, **नमः** = स्तुति है, **च**= और, **शंकराय शम्** = मोक्ष सुख को करनेवाले के लिए, **नमः** = स्तुति है, **च** = और, **शिवाय** = धन धान्य आदि मंगल

सुख करनेवाले के लिए, **च**= और, **शिवतराय** = अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए, **नमः** = स्तुति है ।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे **ओम्, ब्रह्म, ईश्वर** आदि नाम हैं वैसे ही उस के **शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर** नाम हैं । वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है । सुखों की उत्पत्ति का वह ही **करः कर्ता** = करनेवाला है । **शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है, सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं । शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें ।**

ओम पदवाच्य शिव, शंकर, ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिये **शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी** की रात गुजरात प्रान्त टंकारा गाँव के ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द ने महत्वपूर्ण अध्यवसाय किया था । उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया ! सत्य ही खोज निकाला । उस सत्य का प्रकाश महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय मन्त्र के अर्थों में निर्दिष्ट किया है ।

नमः शम्भवाय च. इस यजुः मन्त्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्यम्, आर्य्याभिविनयः, पञ्चमहायज्ञविधिः आदि स्थलों पर किये हैं । महर्षि ने उन अर्थों में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुये सुख, कल्याण के गम्भीर तत्वों का संकेत किया है ।

इन उपर्युक्त वेदमन्त्र एवं महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ से भली भाँति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न भिन्न पदार्थों के नहीं । सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि नाम स्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है । उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है । वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, सम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है । महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गम्भीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरात्रि पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण मागदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोडे ।

गुरूकुल स्नातिका आर्य महिला गौरव स्थिरनिधि

मराठवाडा जो कि एक समय हैदराबाद राज्य में था । भले ही १९४७ में देश स्वतंत्र हुआ, लेकिन हैदराबाद राज्य स्वतंत्र करने के लिये अनेकों राष्ट्रवीरों व आर्य क्रान्तिकारियों ने बहुत बडे प्रयास किये और एक वर्ष बाद यह राज्य स्वतंत्र हुआ । तत्कालीन कठिन परिस्थितियों में आर्य समाज के पं. नरेन्द्रजी जैसे अनेकों मान्यवर विद्वानों ने आर्य परिवारों में पलनेवाले बच्चे-बच्चियों को गुरूकुल पढाने हेतु प्रोत्साहन दिया । इन्हीं के प्रेरणा से आर्य पुत्र एवं आर्य कन्याएं संस्कृत पढने हेतु गुरूकुलो में चले गये । अनेकों आर्य कन्याएं हरिद्वार, हाथरस आदि गुरूकुल में भेजीं गई । उस समय कन्याओं को पढाना तथा उन्हें उच्चशिक्षित कराना समाज को मान्य नहीं था । फिर भी इन बंधनों को तोडकर माता-पिताओं ने अपने बच्चियों को गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली से पढने हेतु दूर भेज दिया । यह बडा क्रान्तिकारी काम था । इनमें से श्री भागवत नानाजी गित्ते, श्री कृष्णदेव गोविंद मरे, श्री दौलतराव गिरवलकर जैसे पिताओं ने बडे धैर्य के साथ अपनी कन्याओं को गुरूकुलों में भेजकर उन्हें गुरूकुल की सुयोग्य स्नातिकाएं बनाया । इतना ही नहीं, इन्होंने कन्याओं के जातिप्रथा को तोडकर विवाह करवाये । आगे चलकर इन्हीं स्नातिकाओं ने अपने पतिद्वारा चलाये गये सामाजिक कार्यों, आर्य समाज के आन्दोलन तथा वेदप्रचारादि कार्यो में भाग लिया व पूरा सहयोग दिया । अपने परिवार में वैदिक विचारों का वातावरण बनाया । अपनी सन्तानों को सुसंस्कारित कर व उन्हें उच्च शिक्षित बनाकर आर्य समाज व राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्य करने हेतु प्रेरणाएं भी प्रदान की । ऐसी स्वतंत्रता पूर्वकालीन गुरूकुल की यशस्वी स्नातिका महिलाओं की स्मृतियों/गौरव में प्रान्तीय सभा में स्थिरनिधियों की स्थापना होनी चाहिए । इससे एक तो उन आदर्श माताओं का गौरव भी होगा और उनके नामपर भविष्य में वेदप्रचार कार्य भी होता रहेगा । अतः ऐसे परिवारजनों से निवेदन हैं कि वे अपनी गुरूकुल स्नातिका माताओं की गौरव स्मृतियों में स्थिरनिधियों की स्थापना हेतु संकल्प करें और सभा से सम्पर्क करें ।

- मन्त्री,म.आ.प्र.सभा

स्वाधीनता सैनिक कृतज्ञता स्थिरनिधि

आर्य समाज के माध्यम से और प्रेरणा से अनेकों देशभक्तों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम, हैदराबाद स्वतंत्रता आन्दोलन, गोवा मुक्तिसंग्राम आदियों में उत्साह के साथ भाग लिया । वे कम पढ लिखे थे, विद्वान नहीं थे, किन्तु आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होकर वे सदैव राष्ट्रकार्य में आगे आते रहें । जहां कहीं भी क्रान्तिकारी घटनायें हो, वहीं पर वे सम्मिलित होते रहें । कईयों को जेल जाना पडा, तो कईयों ने अनेकों अत्याचार सहन करते हुए प्राणपन से मातृभूमिकी रक्षा की । महर्षि दयानन्द के विचारों से वे पूरी तरह प्रभावित थे । आजादी के लिये उन्होंने बडे उत्साह के साथ लडाई लडी । इन्हीं के त्याग, समर्पण व बलिदान के कारण देश स्वतंत्र हुआ तथा हैदराबाद राज्य भी मुक्त हो गया । स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने इन सभी स्वाधीनता सेनानियों का गौरव किया और उन्हें पेन्शन मंजूर की । निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय कर्तव्य समझकर उन्होंने यह कार्य किया था । किसी पेन्शन आदि की उन्हें बिलकुल भी इच्छा नहीं थी । कुछ देशभक्तों ने तो यहां तक कि पेन्शन भी ठुकरा दी । ऐसे महान आर्य राष्ट्रभक्तों का सही अर्थों में गौरव होना चाहिए ।

जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने पेन्शन स्वीकार की और उसे अपने परिवार के कल्याण हेतु उपयोग में लाया । अपने पत्नी, पुत्रों, कन्याओं, भाईयों व पौत्र तथा रिश्तेदारों की उन्नति हेतु उसका उपयोग किया । साथ ही उन्हें बस व रेल यात्रा के लिये मुफ्त पास भी मिल गये । नौकरियों में आरक्षण भी मिला । इसके लाभ ही लाभ परिवारवालों ने उठाये ।

अब ऐसे परिवारजनों को अपने स्वाधीनता सैनिक **पिताजी या दादाजी** का नाम अजरामर करना चाहिये । उनके यश व कीर्ति को बढाने के लिये उनके नामपर स्थिरनिधियां स्थापन होनी चाहिए । इनके ब्याज से भविष्य में वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार होता रहेंगा । इस दृष्टि से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने **स्वाधीनता सैनिक कृतज्ञता स्थिरनिधि** स्थापन करने का निर्णय लिया है । इन स्थिरनिधियों को पूर्ण करने के लिये उन देशभक्तों के परिवारजनों, इष्ट-मित्र आदियों ने मिलकर कम से कम एक लाख रूपयों की स्थिरनिधि बनानी चाहिये । इस हेतु सब मिलकर प्रयास करें और प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से संपर्क करें ।

निवेदक- डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधव देशपाण्डे (मंत्री)-म.आ.प्र.सभा

समाचार दर्पण

मुंबई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई व आर्यवीर दल द्वारा आगामी दि. २४ अप्रैल से १ मई २०१६ तक **आदर्श जीवन निर्माण शिविर** का आयोजन किया गया है । इस शिविर में युवकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व विकास के साथ ही शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए आवश्यक वैदिक विचारों, व्यायाम, योगासन, प्राणायम, ज्युदो कराटे, ध्यान, संध्या, यज्ञ आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा । यह शिविर भैरव सेवा समिति कर्णबधिर विद्यालय, सरावली, गोवा नाके के पास, भिवंडी जि. ठाणे इस स्थान पर होगा ।

'दयानन्दने स्त्रीजाति का सम्मान किया' -सुमित्रा महाजन

'महर्षि दयानन्द सरस्वती का आ समस्त समाज ऋणी है, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा, यज्ञ, वेदआदि का अधिकार दिलाकर उन्होंने स्त्रीजाति का बहुत बडा सम्मान किया है,' यह उद्‌गार थे लोकसभाअध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन के । इन्दौर में आर्यसमाज एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आयोजित द्वारा वेदसम्मेलन में मुख्यातिथि के रूप में श्रीमती महाजन बोल रही थी । इस अवसर पर पदाधिकारियों द्वारा उन्हें महर्षि दयानन्द का चित्र एवं सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ भेंट कर उनका सम्मान किया गया । समारोह में आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, श्रीमती स्नेहलता हांडा, श्री वेदरत्न आर्य, श्री मनोज सोनी, श्री विजय मालवीय आदि उपस्थित थे ।

श्रावणी २०१६ के लिए स्वीकृति- निवेदन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि प्रतिवर्ष व्यापक रूप से श्रावणी उत्सव मनाती है । आगामी वर्ष के श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमों के लिए जो विद्वानों व भजनोपदेशक समय देना चाहते हैं, उन सभी से निवदेन है कि आप अपनी स्वीकृतियां अभी से प्रदाने करें, ताकि रेल्वेआरक्षण कराने में किसी प्रकार की असुविधाएं न हों । महाराष्ट्र से बाहर के विद्वान् व भजनोपदशक पूरा एक महिना देवें । महाराष्ट्र प्रान्त के विद्वान् व भजनोपदेशक कितना समय और कौनसी तिथियां देंगें ? यह अभी से निश्चित करें । अतः सभी इच्छुक विद्वान् व भजनोपदेशक सभा के मन्त्री श्री माधवराव देशपाण्डे, मो.९८२२२९५५४५ तथा वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी मो.९४२०२६९९२४, से संपर्क कर अपनी स्वीकृतियों की सूचनाएं देवें ।

– सभा मंत्री

प्रांतीय सभा म.प्र. व विदर्भ का चुनाव

पं.सत्यवीर शास्त्री प्रधान व अशोक यादव मंत्री बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का ९८ वाँ वार्षिक अधिवेशन पं. सत्यवीरजी शास्त्री की अध्यक्षता में आर्य समाज, हंसापुरी सी.ए. रोड, नागपूर में दि. ३ जनवरी २०१६ को सम्पन्न हुआ । अधिवेशन में १०२ आर्यसमाजों के एक सौ पचास प्रतिनिधियों की उपस्थिति थी । निर्वाचन अधिकारी के रूप में वयोवृद्ध ज्येष्ठ आर्यसमाजी श्री ताराचंदजी चौबे थे । सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य चुने गए ।

प्रधान– पं. सत्यवीर शास्त्री (अमरावती)
उपप्रधान– प्राचार्य अनिल शर्मा (नागपुर)
उपप्रधान–जयसिंह गायकवाड (जबलपूर)
उपप्रधान–शशि सोनी (मुकुंदपुर)
मंत्री–अशोकजी यादव (नागपूर)
उपमंत्री–श्रीकृष्णलालजी आर्य (खंडवा)
उपमंत्री–मयंकजी चतुर्वेदी (सिंगरौली)
उपमंत्री–हरिदत्तजी जुमळे (नागपूर)
उपमंत्री–देविप्रसादजी आर्य (शिवनी)
का.मंत्री– संतोष गुप्ता (नागपूर)
कोषाध्यक्ष–यशपालजी आर्य (नांदुरा)
पुस्तकाध्यक्ष– रामसिंहजी ठाकूर(कारंजालाड)
लेखानिरीक्षक रमेश घोडसकर(अमरावती)
* **अंतरंग सदस्य**– सर्वश्री ओमप्रकाश बोबडे आर्य, ब्रीजलालजी राठी, सुभाषजी सहारे, घनश्यामजी रेवतानी, सोहनलालजी आर्य, ॲड.लखनलालजी सोनी, मदनजी जाभुर्णे, रामभाऊ बोचरे, वामनरावजी आवठे, सुमनताई पवार, रामभाऊ मुंगे, ताराचंद चौबे।

गुंजोटी में प्रियदत्तजी प्रधान व राजवीरजी मंत्री बनें

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम आर्य बलिदानी हुतात्मा वेदप्रकाशजी की जन्मस्थली होने का सौभाग्य प्राप्त गुंजोटी ता. उमरगा जि. धाराशिव (उस्मानाबाद) की आर्य समाज का चिरप्रतीक्षित निर्वाचन अधिवेशन दि. २४ फरवरी २०१६ को सोत्साह सम्पन्न हुआ । वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन में सम्मिलित सभी सदस्यों ने पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से निर्विरोध चयन किया । पं. प्रियदत्तजी शास्त्री को प्रधान व पं. राजवीरजी शास्त्री को मन्त्री के रूप में चयनित किया गया । सम्पूर्ण कार्यकारिणी इस प्रकार से है –

प्रधान – पं. श्री प्रियदत्तजी शास्त्री
उपप्रधान – श्री महाळप्पा दुधभाते
मन्त्री – पं.श्री राजवीरजी शास्त्री
उपमन्त्री–श्री विश्वनाथ कदेरे

कोषाध्यक्ष– श्री सन्तोष दुधभाते
पुस्तकाध्यक्ष–श्री श्रीमंत चौधरी
संरक्षक– १) श्री दिनकररावजी देशपाण्डे
२) श्री काशिनाथराजी कदेरे
परामर्शदाता– श्री रमेश ठाकूर
अंतरंग सदस्य – सर्वश्री ओमप्रकाशजी शिन्दे, वेदप्रकाश शिवराज आर्य, नारायणराव बेळमकर, मोहनराव पाटील, विष्णु खंडागळे विलास पांचाळ । निर्वाचन के पश्चात् सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया गया । नूतन मन्त्री श्री राजवीरजी शास्त्री प्रतिक्रिया देते हुए भविष्य में आर्य समाज गुंजोटी को अधिकाधिक सक्रिय व वेदप्रचारादि विभिन्न उपक्रमों द्वारा लोकोपयोगी बनाने का आश्वासन दिया । उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक आर्य समाज में आयी शिथिलता को दूर कर हम संगठित रूप से अतीत कालीन ऊर्जितावस्था को लाने का प्रयास करेंगे । प्रधान श्री प्रियदत्तजी शास्त्री ने बताया कि संस्कार शिविरों तथा प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन कर इस संस्था को गतिशील बनाने की कोशिश होंगी ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित

श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय, परली- वै.

प्रवेश सूचना

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय'** में दि.१५ जून २०१६ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि. मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा।

अतः अपने बच्चों को सुसंकारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।

सम्पर्क– आचार्य प्रवीण (८८५५०८०६३२),
विज्ञानमुनि(९९७५३७५७११),डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२१९५१९०४)

– विनीत –

जुगलकिशोर लोहिया (प्रधान) | उग्रसेन राठौर (मंत्री) | प्रभुलाल गोहिल (कोषाध्यक्ष)

आर्य समाज परली–वैजनाथ जि. बीड

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषित सन्देश

कर्म हाच खरा सोबती

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, भार्या गृहद्वारि जनः श्मशाने ।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

अर्थ – (जेंव्हा माणूस मरतो, तेंव्हा) सारे धन-धान्य जमिनीवरच पडून राहते, जनावरे गोठ्यातच उभी राहतात. बायको घराच्या दरवाज्यापर्यंत साथ देते, मित्रजन हे स्मशानापर्यंत येतात, देह हा चितेवर जळून भस्मीभूत होतो. पण जीवात्म्याच्या परलोकमार्गावर जर कोणी सोबत येत असेल तर ते म्हणजे **कर्म** होय. हे एकमेव कर्मच शेवटपर्यंत साथ देते.

दयानंदांची अमृतवाणी

विद्वानांच्या स्वार्थामुळेच जगात अनर्थ

माझे हे काम उपकारक नाही, असे जरी कोणाला वाटले तरी त्यांना त्याला विरोधही करू नये. कारण माझा हेतू कोणाचे नुकसान करावे अथवा कोणाला विरोध करावा हा नसून सत्यासत्याचा निर्णय करावा हा आहे. याचप्रमाणे सर्व लोकांनी न्यायाने वागणे हे अत्यंत उचित आहे. मनुष्याचा जन्म वादविवाद व विरोध करण्यासाठी नसून सत्य-असत्याचा निर्णय करण्यासाठी आहे. या मतमतांतराच्या वितंडवादाने जगामध्ये ज्या अनिष्ठ गोष्टी घडल्या, घडत आहेत व घडतील, त्यांची कल्पना निःपक्षपाती विद्वज्जन करून शकतात.जोपर्यंत मानव जातीमध्ये चालू असलेला एकमेकांविरूद्धचा मिथ्या मतमतांतरांचा वाद संपणार नाही, तोपर्यंत सर्वांना आनंद प्राप्त होणार नाही. जर आपण सर्व माणसे व विशेषतः विद्वान लोक ईर्ष्या व द्वेष सोडून देऊन सत्य -असत्याचा निर्णय करून सत्याचे ग्रहण व असत्याचा त्याग करतील, तर ही गोष्ट मुळीच असाध्य नाही. या विद्वानांमधील विरोधामुळेच सर्व लोक विरोधाच्या जाळ्यात अडकले आहेत. जर हे लोक अपल्याच स्वार्थाचा विचार न करता सर्वांच्या हिताचा विचार करतील तर तात्काळ एकमत होईल.

गुढीपाडवा, आर्यसमाज -परिवर्तन पर्वाचा युगारंभ

– प्राचार्य देवदत्त तुंगार

गुढीपाडवा हा भारतीय संस्कृतीमधील उत्साहाचा उत्सव सण आहे. इ.स. १८७५ साली गुढी पाडव्याच्या दिवशी महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी काकडवाडी गिरगांव, मुंबई येथे आर्यसमाज या संस्थेची स्थापना केली. राजकीय स्वातंत्र्य आणि सामाजिक परिवर्तन या दोन्ही आघाड्यांचा समन्वय साधून स्वामीजींनी टिळक व आगरकरांच्या 'आधी राजकीय की आधी सामाजिक ?' या वादावर समन्वित तोडगा काढला. स्वामी दयानंदांचे गुरू विरजानंद यांनी १८५७ च्या स्वातंत्र्य युद्धाला प्रेरणा दिल्याचे सांगितले जाते. फासावर लटकलेल्या शहीद भगतसिंहासारख्या अनेक क्रांतिकारकांना महर्षी दयानंदांनी व त्यांच्या **सत्यार्थ प्रकाश** ग्रंथाने स्फूर्ती व प्रेरणा दिली हा इतिहास आहे. एकीकडे राजकीय स्वातंत्र्याच्या आघाडीवर आर्यसमाजाने जोरकस प्रयत्न सुरू केले, तर दुसरीकडे समाजामधील कालबाह्य रूढी आणि अनिष्ट सामाजिक प्रथा परंपरा यांविरूद्ध बंड पुकारले. स्त्री, शूद्रांना शिक्षण देऊ नये, विधवांचे विवाह होऊ नयेत, बालविवाहच करावेत, पती निधनांनतर पत्नीने सती जावे ह्या रूढी परंपरा समाजात दृढमूल झाल्या होत्या. महर्षी स्वामी दयानंदांनी अस्पृश्यता पाळू नका, स्त्री शूद्रादिकांना ज्ञानाची कवाडे खुली करा. विधवांना विवाह करण्यात यावेत, जातिनिर्मूलनासाठी आंतर जातीय विवाहांना सक्रिय प्रोत्साहन देण्यात यावे, अंधश्रद्धा, जादूटोणा, अंगारे-धुपारे, गंडेदोरे, ताईत यांविरूद्ध आर्य समाजाने व दयानंदांनी सुमारे दीडशे वर्षे सातत्याने समाज प्रबोधन केले आहे. आर्य समाजाने मुलींसाठी शेकडो कन्या गुरूकुले व पाठशाळा स्थापन केल्या. जाती व्यवस्था व त्यातील विषमता व अन्यायांविरूद्ध बंडाचे निशाण फडकावले, आंतर जातीय विवाहांना सक्रिय प्रोत्साहन दिले. समाजातील वंचित उपेक्षित घटकांना सन्मानाचे जिणे दिले.

आर्य समाजाचा कार्यक्रम –

महर्षी दयानंद (१८२४ ते १८८३) यांनी महाराष्ट्रात आर्यसमाजाची स्थापना केली असली तरी आर्यसमाज फोफावला.पूर्वीच्या सर्वात मोठ्या असलेल्या अखंड पंजाब राज्यात व उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदी राज्यातही आर्यसमाजाने चांगले बाळसे धरले.

महाराष्ट्रात आर्यसमाजी मंडळीत पंजाबी, सिंधी, मारवाडी, गुजराथी व हिंदी भाषिक अधिक दिसतात. खरे म्हणजे

न्यायाधीश व पत्रकार असलेले श्री गोपाळ हरि देशमुख उर्फ लोकहितवादी, न्यायमूर्ती महादेव गोविंद रानडे, कुंटे प्रभृती दयानंदाचे निकट सहकारी होते. महात्मा फुले यांनाही दयानंदांच्या कार्याबद्दल आत्मीयता होती. यामुळेच पुण्यात स्वामीजींची रानडे-फुले प्रभृतींनी हत्तीवरून प्रचंड मिरवणूक काढली. छत्रपती शाहू महाराज यांनी तर **'आपण आर्यसमाजाचे सदस्य आहोत आणि कट्टर वेदाभिमानी आहोत'** अशी स्पष्ट लेखी ग्वाही दिली. शाहू महाराजांनी पत्रमहर्षी हरि सखाराम तुंगार यांना **दयानंद चरित्र** लिहिण्याची प्रेरणा दिली व आर्थिक सहकार्य केले. महर्षी दयानंद सरस्वती यांचे चरित्र आणि कामगिरी हा ग्रंथ तुंगारांनी १९२० साली प्रसिद्ध केला. **आर्यधर्मेंद्र दयानंद सरस्वती** हा ८२ पानी छोटा ग्रंथ ह.स.तुंगारांनी दयानंद जन्मशताब्दी वर्षात (१९२४) प्रसिद्ध केला. पण मराठीत आर्यसमाजी साहित्य एकंदरीत दुर्मिळच आहे. ह.स.तुंगार, लक्ष्मणराव ओगले यांच्यानंतर श्रीपाद जोशी (गांधीवादी कार्यकर्ते व कोशकर) यांनी **समग्र क्रांतीचे अग्रदूत दयानंद** हा ग्रंथ पत्रमहर्षी तुंगारांना अपर्ण केला आहे. असे तुरळक प्रयत्न सोडले व सध्या **लातूर समाचार** (संपादक जडे) तसेच मासिक **वैदिक गर्जना** हे आर्य प्र. सभेचे परळी येथून प्रकाशित होणार प्रकाशन सोडल्यास मराठीत आर्य समाजाचा प्रचार प्रसार करणारे प्रभावी माध्यम नाही.या आनुषंगाने भविष्यात महाराष्ट्रात भाषण व लेखनाच्या माध्यमाने आर्य समाज अधिक सक्रिय होईल, अशी अपेक्षा बाळगू या!

-निरामय, कला मंदिरामागे,
वजिराबाद, नांदेड
मो.९३७२५४१७७७

पर्जन्यवृष्टी यज्ञ - आयोजनासंदर्भात बैठक

सध्या पाण्याच्या अभावी जीवन - मरणाचा प्रश्न उभा आहे. संपूर्ण महाराष्ट्रासह देशातही इतरही कांही राज्यात पाणी प्रश्नाने गंभीर रूप धारण केले आहे. सर्वत्र एकच चिंता आहे, ती म्हणजे पाण्याची ! यास्तव आगामी पावसाळ्यात भरपूर पाऊस पडावा, यासाठी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने एकाच वेळी अनेक ठिकाणी **पर्जन्यवृष्टी यज्ञाचे** मोठ्या प्रमाणात आयोजन करण्याचे ठरविले आहे. यासंदर्भात विचार विनिमय करण्यासाठी प्रांतीय सभेने दि. २ मे २०१६ (सोमवार) रोजी स. ११ वा. आर्य समाज परळी-वै. येथे एका व्यापक बैठकीचे आयोजन केले आहे. तरी राज्यातील सर्व आर्यसमाजांचे प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष, ज्येष्ठ कार्यकर्ते, सभेचे पदाधिकारी, अंतरंग सदस्य व संरक्षक या सर्वांनी उपस्थित राहावे, असे आवाहन सभेतर्फे करण्यात येत आहे. -सभामंत्री

वैचारिक प्रदूषणावर प्रभावी उपाय - वैदिक विचार

–सौ.मालन अनंत रुद्रवार

आजच्या युगात मानवापुढील सर्वात अक्राळ-विक्राळ व महाभयंकर समस्या कोणती असेल तर ती म्हणजे वैचारिक किंवा सांस्कृतिक प्रदूषण होय. या प्रश्नाचे निराकरण कसे करायचे ? याच विवंचनेत बुद्धिप्रामाण्यवादी वर्ग सध्या गुंतलेला आहे. एखाद्या प्रश्नाचे उत्तर शोधायचे म्हणजे त्याचा प्रामुख्याने तीन स्तरावरुन विचार झाला पाहिजे. पहिला राजकीय, दुसरा सामाजिक व तिसरा म्हणजे धार्मिक ! यांपैकी राजकीय प्रकाराबाबत आपल्यासारखी सामान्य व्यक्ती कांहीही करु शकत नाही.

दुसरा प्रकार म्हणजे सामाजिक ! अनेक समविचारी प्रवाहाच्या व्यक्तींचा समूह म्हणजे 'समाज' होय. समाज म्हणजेच संघटन ! आणि हे संघटन होण्यासाठी मुख्य गरज आहे ती म्हणजे धार्मिक किंवा नैतिक विचारांच्या अधिष्ठानाची !

एखादी व्यक्ती कितीही श्रीमंत, बडी असली तरी तिच्या नीतीमत्तेवरुनच त्याची किंमत किंवा सामाजिक दर्जा ठरत असतो. म्हणजेच त्याच्या शुद्ध, पवित्र, सच्छिल चारित्र्यावरच त्याच्या यशाचे मोजमाप अवलंबून असते आणि हे अशा प्रकारचे यश हे अधार्मिक व्यक्तीला मिळूच शकत नाही. धार्मिक याचा अर्थ सांप्रदायिक असा नव्हे! संप्रदाय आणि धर्म यामध्ये फार मोठी तफावत आहे. आज आपल्याला दिसतात ते सर्व पंथ, संप्रदाय(हिंदू, मुसलमान, ख्रिस्ती, यहुदी) होत. धर्म म्हणजे मानवधर्म, धर्म म्हणजे परमेश्वराची आज्ञा यथावत पालन करणे. "धर्म म्हणजे आपण इतरांकडून ज्या सुखाची अपेक्षा करतो किंवा जशी वर्तणूक इच्छितो तशी वागणूक आपण इतरांस देणे" होय. हा झाला मानवधर्म! या धर्माचे विवेचन किंवा नियम फक्त वेदांमध्येच आपल्याला सापडतील. वेदनियमांच्या किंवा नैतिक मूल्यांच्या विरुद्ध वागणाऱ्यांची गती काय होते ? याची प्रचिती आपणांस रामायण व महाभारतातील विविध घटना प्रसगांवरून येतेच !

एखाद्या व्यक्तीचे मूल्यमापन ती व्यक्ती किती श्रीमंत आहे, यावर अवलंबून नसून ती समाजात वागते कशी ? त्याचा आचार, विचार, व्यवहार कसा आहे? यावरच अवलंबून असते ! या यशासाठी, नैतिक अधिष्ठानाची गरज

असून ती व्यक्ती धार्मिक देखील असणे आवश्यक आहे. धार्मिक म्हणजे वैदिक अर्थात वेद वचनांचे पालन करणारा! वेद म्हणजे यज्ञीय संस्कृती ! होम हवन करणे, प्रदूषणरूपी भस्मासूरापासून वाचण्यासाठी (वैचारिक, सांस्कृतिक, प्रदूषणाच्या) एकच करावयाचे आहे व ते म्हणजे 'यज्ञ' ! आणि फक्त यज्ञच करुन थांबायचे नाही तर समाजातील अंधश्रद्धा, कुरीती, अधार्मिक चालीरीती यांवर सुद्धा आळा बसावयास हवा. जेणेकरुन आंतरिक (नैतिक) प्रदूषणाचा ही नाश होईल व वैचारिक प्रदूषण ही नष्ट व्हायला मदत मिळेल.

तुम्ही म्हणाल, यज्ञ करायचे म्हणजे काय करायचे? ते आम्हाला कसे शक्य आहे? त्याचा उपयोग तरी काय? आमच्या एकट्याने काय काम होणार आहे ? हो, परंतू थोडे थांबा ! एवढी घाई करु नका किंवा घाबरुन ही जाऊ नका! यज्ञ म्हणजे अश्वमेध किंवा सोमयागच नव्हेत ! जे की तुमच्या एकट्याच्या आवाक्याबाहेरचे आहेत. एकटा माणूस काय करु शकत नाही ? 'थेंबे-थेंबे तळे साचे' या प्रमाणे प्रत्येकाने स्वत:चे कर्तव्य ओळखले तर वातावरण शुद्ध होण्यास मदत होईल. रामायण, महाभारत काळात प्रत्येक घरी दररोज अग्निहोत्र होत असे, त्याशिवाय भोजनच होत नसे!

हे झाले व्यक्तिसंबंधाने ! आता राष्ट्रसंबंधाने पाहू या ! एखाद्या राष्ट्राचे उज्ज्वल यश हे त्याच्या नैतिकतेवर व संस्कृतीवर अवलंबून असते. आणि राष्ट्र म्हणेज कांही एखादी वस्तू नाही. राष्ट्र म्हणजे त्यातील लोक ! राष्ट्राची मान उंचावयाची असेल, तर त्यातील लोक अगोदर सुधारले पाहिजेत किंवा त्यांच्यात वैचारिक बदल घडवून आणला पाहिजे. म्हणजेच वैचारिक क्रांती झाली पाहिजे. हा बदल घडवून आणण्याच्या कामी कायदा किंवा राजकीय व्यवस्थेने कांहीही होणार नाही. त्यासाठी माणसांच्या मनामध्ये व विचारांमध्ये परिवर्तन घडावयास पाहिजे. जसे शिवाजी महाराजांनी सारा महाराष्ट्र जागवून संपूर्ण मुसलमानी राजवट उलथून पाडली. शिवाजी महाराजांनी स्वराज्य स्थापनेसाठी 'हर-हर महोदव' या एका घोषणेने सर्व जनतेला स्वराज्य या ध्येयाने प्रेरित केले. तद्वतच वैचारिक क्रांतीद्वारेच सांस्कृतिक प्रदूषणाचे सावट दूर करता येईल. फक्त एका ध्येयाने प्रेरित होऊन शिवाजी महाराजांनी अत्याचारी जुलमी मुसलमानी राजवटीपासून लोकांना संरक्षण दिले.

तसेच कार्य आता आर्य कार्यकर्त्यांनी पुढे येऊन करावयास हवे !

आज वैदिक विचारांची समाज व राष्ट्राला फार मोठी गरज आहे. चोहीकडे अज्ञान, अभाव व अन्याय या तीन शत्रूंचे साम्राज्य पसरले आहे. एकीकडे भारतात पौराणिक अंधविश्वास दिवसेंदिवस वाढताहेत. तर दुसरीकडे विदेशात इस्लामिक कट्टरतेचा उन्माद मानवतेचा गळा घोटतोय. तसेच एकीकडे पुरोगामित्वाच्या नावावर नास्तिकता, तर दुसरीकडे आधुनिक विज्ञानाच्या नावावर पाश्चिमात्य कुविचार वाढत आहेत.

या सर्व प्रश्नांवर प्रमुख परिणामकारक चिरस्थायी उपाय म्हणजे वैदिक सिद्धांत होय. स्वामी दयानंदांनी ५ हजार वर्षानंतर आम्हांकरिता विशुद्ध स्वरुपाचे वेदज्ञान दिले. हे वैदिक विचार जसे पूर्वी आवश्यक होते, त्याहून ही त्यांची गरज खऱ्या अर्थाने आज सर्वाधिक आहे. तर चला, आपण सर्वजण मिळून संघटीत होऊन आर्य समाजाच्या माध्यमाने या सर्व प्रकारच्या प्रदूषणांवर आळा घालण्यासाठी तत्पर होऊ या !

-द्वारका, जुना मोंढा
माजलगांव जि. बीड
मो. ९४२३२८७४२५

वार्ता विशेष

विशुद्ध वेदार्थासाठी बोधरात्री वरदान - लक्ष्मण आर्य

थोर महात्मे सामान्य घटना-प्रसगांमुळे जागृत होतात व समाजाला नवी दिशा देण्याचे कार्य करतात. अशा महात्म्यांपैकी महर्षी स्वामी दयानंद हे एक थोर क्रांतिकारी व्यक्तिमत्व होते. वयाच्या चौदाव्या वर्षी मूषकलीला पाहुन खऱ्या ईश्वराविषयी शोध व बोध घेण्याची त्यांची जिज्ञासा जगाला विशुद्ध वेदार्थ देण्यासाठी वरदान ठरली, असे प्रतिपादन प्रांतीय सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजात दि. ७ मार्च रोजी आयोजित ऋषी बोध पर्वानिमित्त आयोजित प्रबोधनपर कार्यक्रमात ते प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी सभाप्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी हे होते. तर व्यासपीठावर आर्य सभाजाचे मंत्री श्री उग्रसेन राठौर, वैद्य विज्ञानमुनी, माजी सैनिक अमृतमुनिजी आदी उपस्थित होते. आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणातून श्री आर्य यांनी शिवरात्रीला बालक मूलशंकरच्या लहानपणी उंदराने शिवपिंडीवर मांडलेल्या उच्छादाची घटना विषद केली. ते म्हणाले - या घटनेमुळे समग्र विश्वात आध्यात्मिक क्रांती झाली. ईश्वरीय सत्य वैदिक ज्ञानाचा नव्याने उदय झाला. अविद्येच्या काळोखात वावरणाऱ्या

दुनियेला आर्षज्ञानाचा सूर्यप्रकाश मिळाला व शाश्वत सुखाचा मार्ग सापडला. सद्य युगात स्वामीजींच्या अनुयायांनी प्रखरपणे वैदिक विचारांचा अंगिकार करून व्यक्तिगत व सामाजिक प्रगती साधणे ही काळाची गरज आहे, असे ही ते म्हणाले.

अध्यक्षीय समारोपात सभेचे प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजींनी बोधरात्री झाली नसती, तर आपण ईश्वर ज्ञानापासून वंचित राहिलो असतो, असे सांगितले. ते म्हणाले - जन्मजन्मांतरीची महर्षींची ज्ञानसाधना व तपश्चर्या दयानंदांच्या जिज्ञासू वृत्तीमुंळे वैश्विक वेदक्रांती घडविण्यास कारणीभूत ठरली. यामुळे आपणां सर्वांना शाश्वत सुखाची प्राप्ती झाली आहे. प्रारंभी पं. प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या यज्ञात यजमान सौ.व श्री यशवंत गुट्टे, सौ.व श्री दयानंद भारती, सौ.व श्री दत्तराव गित्ते सहभागी झाले होते. यानंतर सौ. दीक्षा चव्हाण, डॉ.सौ. हर्षा भायेकर, डॉ.सौ. वीरश्री शास्त्री यांनी भजने सादर केली तर लहान-बालकांनी आपली मनोगते सादर केली. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक सौ.डॉ.अनुराधा काळे यांनी केले, तर सूत्रसंचलन सौ.मनीषा आचार्य यांनी केले.

पांच महाव्रतांच्या पालनाने जीवनाचे कल्याण -डॉ.शिंदे

खरा शिव हा सर्वव्यापक व कल्याणकारी एक ईश्वर असून त्याची उपासना श्रद्धा व भक्तीने केली पाहिजे तसेच अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह या पाच महाव्रतांच्या अनुष्ठानाने मानवीय जीवनाचे खरे कल्याण साधते, असे विचार प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे यांनी मांडले.

सोलापूर येथील आर्य समाजात महर्षि दयानंद बोधदिवस मोठ्या उत्साहात साजर करण्यात आला. त्यानिमित्त **आर्य समाजाच्या दृष्टिकोनातून महाशिवरात्र** या विषयांवर आयोजित व्याख्यान समारंभात डॉ. शिंदे प्रमुख वक्ते म्हणून बोलत होते. त्यांनी आपल्या व्याख्यानातून उपवास व उपाशी या शब्दातील भेद समजावून सांगितला. सुरूवातीला सकाळी पं. राजवीर शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली **महापुरूष प्रशंसन यज्ञ** संपन्न झाला. यात सर्वश्री प्रा. एस.बी.क्षीरसागर, ॲड. गुरूदत्त बोरगांवकर, अशोक खत्री, अजित शिवाजी पाटील हे यजमान म्हणून उपस्थित होते. या वेळी शास्त्रीजींनी दयानंदांची बोधरात्री ही जगाला भ्रांतीकडून क्रांतीकडे घेऊन जाणारी एक ऐतिहासिक घटना ठरल्याचे स्पष्ट केले. सौ. गायत्री भोसले, कु.रश्मी, कु. पृथ्वी यांनी भजने सादर केली. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन भाऊसाहेब सुतार यांनी केले तर आदित्य सिद्धालकर यांनी आभार मानले.

निवघा आर्य समाजाचे बांधकाम सुरू- मदतीचे आवाहन

हदगांव तालुक्यातील निवघा (बाजार) येथील आर्य समाजाच्या नूंतन इमारतीचे बांधकाम नुक्तेच सुरू झाले आहे. दि. २५ फेब्रुवारी रोजी १८ बाय ३३ या जागेत पंचायत समितीचे सभापती श्री बाळासाहेब कदम यांच्या हस्ते भूमिपूजन करून पायाभरणी करण्यात आली. तत्पूर्वी पं. सोगाजी घुन्नर यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या भूमियज्ञात प्रधान श्याम पाटील, उपप्रधान संभाजी कदम, माजी पो.पाटील गोविंदराव कदम, मंत्री धोंडीराम शिंदे, प्रभाकर पाटील, गणेश बोंढारे आदी यजमान म्हणून सहभागी झाले. कार्यक्रमास सर्वश्री बंडू पाटील, कोषाध्यक्ष गणेश मुधाळ, चंदु पाथरकर, दीपक शिंदे, भाऊराव देशमुख, विजय कदम, प्रभाकर कदम, बापुराव शिंदे, सुभाष शिंदे, जाबुवंतराव कदम, सौ. सुलोचना शिंदे आदींची उपस्थिती होती.

जवळपास ३० वर्षांपूर्वी स्थापना झालेल्या या आर्य समाजाने या परिसरात वेदप्रचार, सत्संग, भजन-प्रवचन, श्रावणी पर्व आदी माध्यमाने सामाजिक, धार्मिक व मानवतेच्या संवर्धनाचे कार्य केले आहे. या संस्थेकरिता स्वतंत्र अशा भवनाचा अभाव होता. म्हणूनच गावकरी व आर्य कार्यकर्ते यांनी मिळून इमारत उभी करण्याचे ठरविले. नूतन इमारतीचे बांधकाम सध्या अर्ध्यावर आले आहे. याला पूर्वत्वाकडे नेण्यासाठी दानशूर आर्यजनांच्या आर्थिक मदतींची आवश्यकता आहे. तरी या पवित्र कार्यास सर्वांनी हातभार लावावा, असे आवाहन आर्य समाज, निवघा तर्फे करण्यात आले आहे.

गुंजोटी येथे ऋषिबोधोत्सव साजरा

गुंजोटी (ता.उमरगा) येथील आर्य समाजाच्या वतीने ७ मार्च रोजी ऋषिबोधोत्सव उत्साहात साजरा करण्यात आला. प्रधान पं. प्रियदत्तजी शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली विशेष यज्ञ संपन्न झाला. यामध्ये यजमान म्हणून सौ.व श्री ओमप्रकाश शिंदे, सौ.व श्री चंद्रकांत कोरे हे सहभागी झाले होते. यज्ञानंतर प्रांतीय सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान यांनी आपल्या सुमधूर भजनांच्या माध्यमाने उपस्थित श्रोत्यांची मने जिंकली व उत्साहाचे वातावरण निर्माण झाले. यानंतर गावातील सामाजिक व परोपकारी कार्यकर्ते श्री बसप्पा म्हाळगे गुरूजी यांचा आर्य समाज गुंजोटी तर्फे प्रधान पं. प्रियदत्तजी शास्त्री, मंत्री राजवीरजी शास्त्री, उपप्रधान म्हाळप्पा

दुधभाते आदींच्या हस्ते सत्कार करण्यात आला. त्याचबरोबर आर्य समाजचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते व संरक्षक दिनकरराव देशपांडे, सौ. वीरश्री सत्यप्रकाश शिंदे यांचाही सत्कार करण्यात आला. याप्रसंगी मान्यवरांनी महर्षी दयानंदाच्या क्रांतिकारी जीवन व कार्यावर विचार मांडले. कार्यक्रमास सर्वश्री काशिनाथराव कदेरे, नारायणराव बेळमकर, कर्णसिंहजी गौतम, मोहनराव पाटील, प्रा. संतोष दुधभाते, महाजन गुरूजी, विश्वनाथ कदेरे, ओमप्रकाश शिंदे आदींसह श्रोते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते.

प्रा.डॉ. वीरश्री शास्त्री 'सेट' परीक्षा उत्तीर्ण

परळी येथील आर्य समाजाच्या महिला कार्यकर्त्या व स्थानिक वैद्यनाथ महाविद्यालयातील हिंदी विषयाच्या सहाय्यक प्राध्यापिका डॉ. वीरश्री वीरेंद्र शास्त्री (आर्य) यांनी नुकतीच सेट ही राज्यस्तरीय प्राध्यापक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण केली आहे. विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या पुणे विभागातर्फे ही परीक्षा घेण्यात येते.या यशाबद्दल सौ. शास्त्री यांचे आर्य समाज परळीच्या साप्ताहिक सत्संगात अभिनंदन करण्यात आले. प्रा. सौ. शास्त्री या वैदिक विद्वान डॉ. वीरेंद्र शास्त्री यांच्या धर्मपत्नी आहेत. प्रांतीय सभा व इतर आर्य समाजाच्या वतीने त्यांचे अभिनंदन !

नांदेडमध्ये प्रधानपदी सौ.तुंगार व मंत्रीपदी पाटील

नांदेड येथील आर्य समाजाची त्रैवार्षिक निवडणूक दि. १३ मार्च २०१६ रोजी उत्साहपूर्ण वातावरणात संपन्न झाली. प्रांतीय सभेचे उपमंत्री प्रा.देवदत्त तुंगार यांनी निवडणूक अधिकारी म्हणून काम पाहिले. निवडणूकीची सर्व प्रक्रिया पूर्ण होऊन प्रधानपदी प्रा.डॉ.सौ.शारदादेवी तुंगार यांची तर मंत्रीपदी श्री सत्येंद्र पाटील (चिंचोलीकर) यांची बिनविरोध निवड करण्यात आली. पदाधिकारी पुढीलप्रमाणे –

प्रधान – डॉ.सौ.शारदा तुंगार

उपप्रधान–१)पं.नारायणराव कुलकर्णी
२) श्रीमती जी.व्ही. मारंपल्ले

मंत्री – सत्येंद्र पाटील (चिंचोलीकर)

उपमंत्री – ॲड.प्रशांत कोकणे

कोषाध्यक्ष – प्रा.विनायकराव तांदळे

पुस्तकाध्यक्ष – दिलीप वैद्य

स.पुस्तकाध्यक्ष–ओमकुमार कुरूडे

आर्यवीर अधिष्ठाता –डॉ.जातवेद पवार

यज्ञव्यवस्थापक– १)संभाजी किरकन
२) सौ.लता पाटील

सभा प्रतिनिधी–१) प्रा.देवदत्त तुंगार
२) सत्यव्रत जिंदम ३) यादवराव भांगे

सल्लागार–सर्वश्रीमधुकरराव खतगांवकर, डॉ.हंसराज वैद्य, डॉ.राजपाल पाटील, डॉ.कर्मवीर आर्य

आर्य समाज लातूरचा वार्षिकोत्सव उत्साहात

लातूर येथील गांधी चौक, आर्य समाजाचा ८१ वा वार्षिकोत्सव दि. २५, २६ व २७ मार्च रोजी मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला. गुरूकुल कांगडी विद्यापीठ, हरिद्वारच्या वेदविभागातील प्रो.डॉ. दीनदयालजी वेदांलकार हे विद्वान व्याख्याते म्हणून तर ऋषिउद्यान अजमेर येथील भजनगायक पं. भूपेंद्रसिंहजी आर्य हे भजनोपदेशक म्हणून आमंत्रित होते. दररोज सकाळी वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश व आध्यात्मिक व धार्मिक विषयांवर प्रवचने तर रात्री सामाजिक, राष्ट्रीय व सामयिक विषयांवर भजन व व्याख्यानांचा कार्यक्रम संपन्न होत असे. कार्यक्रम ऐकण्यासाठी लातूर शहर व परिसरातील ग्रामीण भागातील आर्य कार्यकर्त्यांनी मोठी गर्दी केली होती. आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी श्रोत्यांची भोजन व निवासाची व्यवस्था अत्यंत चांगल्या पद्धतीने केली. दुष्काळ व पाण्याची टंचाई असतांना देखील पदाधिकाऱ्यांनी हा उत्सव घडवून आणल्याबद्दल आर्यजन त्यांचे कौतुक करीत आहेत. हा उत्सव सफल करण्यासाठी प्रधान ॲड. हरिश्चंद्र पाटील, उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री चंद्रभानु परांडेकर यांच्यासह इतरांनी मोठे प्रयत्न केले.

औरादमध्ये हवनाने होळीची आदर्श परंपरा

पू. स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) यांची जन्मभूमी म्हणून ओळख असलेल्या उमरगा तालुक्यातील औराद (गुं.) या गावात सामूहिक संध्या, हवन व जयघोष करीत होळी हा सण साजरा करण्याची आदर्श परंपरा आजही मोठ्या उत्साहात जोपासली जाते. गावातील मारूती मंदिरसमोरील सार्वजनिक ठिकाणी गावातील पुरूष, युवक व बालकमंडळी गोवऱ्या व लाकडे जमवितात. ते रचून मोठ्या भक्तीभावनेने वैदिक मंत्रांच्या उद्घोषात यज्ञास प्रारंभ करतात. इतर गावांप्रमाणे कोणीही बोंबलत नाही किंवा अश्लील शिव्या वगैरे देत नाहीत. हे कार्य गावातील आर्य कार्यकर्ते श्री गुणवंतराव पाटील, रघुराम गायकवाड, पं.संजय गायकवाड व पदाधिकारी मोठ्या प्रयत्नाने पूर्ण करतात.श्री गुणवंतराव पाटील स्वतःच्या खर्चाने तूप, सामग्री व इतर साहित्य एकत्र करतात व हा आनंदोत्सव साजरा करण्यास गावकऱ्यांना प्रेरणा व प्रोत्साहन देतात.पूर्वी हे कार्य पू.हरिश्चंद्र गुरूजी, आचार्य शिवमुनिजी, आण्णाराव पाटील करीत असत. होळी हा सण वैदिक पद्धतीने साजरा करण्याचा आदर्श इतरही गावांनी घ्यावा. याबद्दल त्यांचे अभिनंदन!

आर्य समाज लातूरचा वार्षिकोत्सव उत्साहात

लातूर येथील गांधी चौक, आर्य समाजाचा ८१ वा वार्षिकोत्सव दि. २५, २६ व २७ मार्च रोजी मोठ्या उत्साहात साजरा करण्यात आला. गुरूकुल कांगडी विद्यापीठ, हरिद्वारच्या वेदविभागातील प्रो.डॉ. दीनदयालजी वेदांलकार हे विद्वान व्याख्याते म्हणून तर ऋषिउद्यान अजमेर येथील भजनगायक पं. भूपेंद्रसिंहजी आर्य हे भजनोपदेशक म्हणून आमंत्रित होते. दररोज सकाळी वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश व आध्यात्मिक व धार्मिक विषयांवर प्रवचने तर रात्री सामाजिक, राष्ट्रीय व सामयिक विषयांवर भजन व व्याख्यानांचा कार्यक्रम संपन्न होत असे. कार्यक्रम ऐकण्यासाठी लातूर शहर व परिसरातील ग्रामीण भागातील आर्य कार्यकर्त्यांनी मोठी गर्दी केली होती. आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी श्रोत्यांची भोजन व निवासाची व्यवस्था अत्यंत चांगल्या पद्धतीने केली. दुष्काळ व पाण्याची टंचाई असतांना देखील पदाधिकाऱ्यांनी हा उत्सव घडवून आणल्याबद्दल आर्यजन त्यांचे कौतुक करीत आहेत. हा उत्सव सफल करण्यासाठी प्रधान ॲड. हरिश्चंद्र पाटील, उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री चंद्रभानु परांडेकर यांच्यासह इतरांनी मोठे प्रयत्न केले.

औरादमध्ये हवनाने होळीची आदर्श परंपरा

पू. स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) यांची जन्मभूमी म्हणून ओळख असलेल्या उमरगा तालुक्यातील औराद (गुं.) या गावात सामूहिक संध्या, हवन व जयघोष करीत होळी हा सण साजरा करण्याची आदर्श परंपरा आजही मोठ्या उत्साहात जोपासली जाते. गावातील मारूती मंदिरसमोरील सार्वजनिक ठिकाणी गावातील पुरूष, युवक व बालकमंडळी गोवऱ्या व लाकडे जमवितात. ते रचून मोठ्या भक्तीभावनेने वैदिक मंत्रांच्या उद्घोषात यज्ञास प्रारंभ करतात. इतर गावांप्रमाणे कोणीही बोंबलत नाही किंवा अश्लील शिव्या वगैरे देत नाहीत. हे कार्य गावातील आर्य कार्यकर्ते श्री गुणवंतराव पाटील, रघुराम गायकवाड, पं.संजय गायकवाड व पदाधिकारी मोठ्या प्रयत्नाने पूर्ण करतात.श्री गुणवंतराव पाटील स्वतःच्या खर्चाने तूप, सामग्री व इतर साहित्य एकत्र करतात व हा आनंदोत्सव साजरा करण्यास गावकऱ्यांना प्रेरणा व प्रोत्साहन देतात.पूर्वी हे कार्य पू.हरिश्चंद्र गुरूजी, आचार्य शिवमुनिजी, आण्णाराव पाटील करीत असत. होळी हा सण वैदिक पद्धतीने साजरा करण्याचा आदर्श इतरही गावांनी घ्यावा. याबद्दल त्यांचे अभिनंदन!

शोक वार्ता स्वा.सै. दत्तराम कदम यांचे देहावसान

निवघा (बा.) ता. हदगांव येथील ज्येष्ठ आर्य समाजी स्वा.सै.श्री दत्तारामजी सीतारामजी कदम यांचे नुकतेच वार्धक्यावस्थेमुळे निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९६ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् एक मुलगा, तीन मुली, सून, नातू, नात, पणतू असा विशाल परिवार आहे.

स्व.श्री कदम आर्य विचारांचे कट्टर अनुयायी होते. हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढ्यात त्यांनी हिरिरीने भाग घेतला व निजामशाही विरूद्ध प्रखर लढा दिला. मातृभूमीच्या रक्षणाचे कार्य त्यांनी कर्तव्यभावनेने केले. म्हणूनच त्यांनी स्वातंत्र्य सैनिकांचे वेतन नाकारले. आपल्या कुटुंबियांना सुसंस्कारित करण्यात व वैदिक धर्मी बनविण्यात ते अग्रणी राहिले. आपले नातू संभाजी पांडुरंग कदम यांना शिक्षणासाठी गुरूकुलला पाठविले होते. याच गुरूकुल स्नातकावर सध्या आर्य समाज निवघाच्या उपप्रधानपदाची धुरा आहे. त्यांच्यावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

श्री मनोहर माशाळकर यांचे निधन

सोलापूर येथील आर्य समाजाचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते श्री मनोहरजी माशाळकर यांचे दि. १० मार्च २०१६ रोजी वयाच्या ८८ व्या वर्षी दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी चतुराबाई, मुलगा, मुलगी, सुन, व नातवंडे असा परिवार आहे.

स्व.श्री माशाळकर हे सुरूवातीला तहसिल कार्यालयात लिपिक पदावर कार्यरत होते. ते प्रामाणिक व कर्तव्यदक्ष कर्मचारी होते.पुढे ते बढती मिळवत तहसिलदार पदापर्यंत पोहोंचले. सेवानिवृत्त झाल्यानंतर त्यांनी समाजसेवेचे व्रत धारण केले. आर्य समाजाच्या संपर्कात येऊन स्वाध्याय, संत्संग व चिंतनाच्या माध्यमाने ते एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ते बनले. या संस्थेच्या विविध उपक्रमात सहभागी होऊन एक क्रियाशील कार्यकर्ता म्हणून ओळख निर्माण केली. याशिवाय गोपालक संघ, जीवदया संघ आणि आर्यसमाजच्या संयुक्त माध्यमाने राबविण्यात आलेल्या अवैध कत्तलखाना बंदीच्या आंदोलनात यांनी मोठी भूमिका बजावली. कायदेविषयक सल्लागार

म्हणून देखील त्यांनी काम केले आहे. बरीच वर्षे आर्य समाजाचे अंतर्गत सदस्य व एक चालते बोलते प्रचारक म्हणूनही त्यांची ख्याती होती. ते सतत संत्संग व इतर कार्यक्रमात सहभागी होत असत. जीवनांच्या अंतिम क्षणापर्यंत त्यांनी गायत्री मंत्राचा जाप केला. अशा एका आर्य सिद्धांतावर दृढ निष्ठा ठेवणाऱ्या प्रामाणिक आर्य कार्यकर्त्याच्या निधनाने आर्य समाज सोलापूर व सामाजिक क्षेत्राची मोठी हानी झाली आहे.

त्यांच्या पार्थिवावर पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री भाऊसाहेब सुतार, शरद होमकर, उत्तममुनिजी (शरद दोशट्टी), सुभाष गायकवाड, बालाप्रसाद सोनी, राजवीर शास्त्री आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

श्री भीमराव मुंडे यांचे निधन

सारडगांव ता. परळी-वै. येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते श्री रामेश्वर मुंडे यांचे वडील श्री भीमरावजी मुंडे महाराज यांचे दि. २१ मार्च रोजी आकस्मिकरित्या अल्पशा आजाराने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी, सुपुत्र, दोन कन्या, नातवंडे असा परिवार आहे. दिवंगत श्री मुंडे हे वैदिक विचारांबरोबर वारकरी संत साहित्याचेही अभ्यासक होते. ते रामायण कथा देखील सांगत. त्यांच्या पार्थिवावर अंत्यसंस्कार करण्यात आले. नंतर त्यांच्या घरी लक्ष्मण आर्य व भागवतराव आघाव यांनी मार्गदर्शनाखाली शांतीयज्ञ झाला.

शंकरराव गुट्टे यांना मातृशोक

श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम, परळी येथील शिक्षक श्री शंकरराव गुट्टे यांच्या मातुःश्री श्रीमती वंचळाबाई अंबाजीराव गुट्टे यांचे मांडवा येथे दि. २३ मार्च रोजी पहाटे वार्धक्याने निधन झाले. **जीवेत् शरदः शतम्** । या वेदवचनाप्रमाणे श्रीमती गुट्टे यांनी शताधिक्य (१०२) आयुष्य मिळविले.

त्यांच्या मागे चार मुले, दोन मुली व नातू- पणतू असा विशाल परिवार आहे. जवळपास ५ पिढ्यांना पाहण्याचे भाग्य माताजींना लाभले. सुपुत्र श्री शंकरराव यांनी आपल्या आईची अगदी अंतिम क्षणापर्यंत मनोभावे श्रद्धेने सेवाशुश्रूषा केली. दिवंगत वंचळाबाईच्या पार्थिवावर सायंकाळी ५ वा. अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी मोठा जनसमुदाय उपस्थित होता.

श्री शेषरावजी माने यांचे निधन

उदगीर तालुक्यातील हाळी येथील आर्य समाजाचे प्रधान व वैदिक विचारांचे प्रखर अनुयायी श्री शेषरावजी सिद्राम माने यांचे २० मार्च रोजी दु. १ वा. अल्पशा आजाराने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी, चार मुले सर्वश्री डॉ. कमलाकर, गणपत, कल्याण व अविनाश एक कन्या सौ. अनिता रमेश भांबळे, सुना, जावई, नातवंडे असा विशाल परिवार आहे.

श्री माने हे जि.प.शाळेचे शिक्षक, मुख्याध्यापक होते. एक तत्वनिष्ठ आदर्श शिक्षक, प्रामाणिक प्रतिष्ठित नागरिक व स्वाध्यायशील आर्य समाजी कार्यकर्त्ता म्हणून त्यांची हाळी-हंडरगुळीच्या पंचक्रोशीत ओळख होती. ज्ञानदानाचे व्रत धारण करीत त्यांनी अनेक चांगले विद्यार्थी घडविले. शाळेतील मुलांबरोबरच ग्रामवासियांना देखील नीतिमत्तेचे धडे देत ते सर्वांचे मार्गदर्शक बनले. समाजात त्यांचा गुरूजी म्हणून चांगलाच प्रभाव होता. आपल्या कृतिशील जीवनातून त्यांनी प्रेरणेचे एक चालते-बोलते दीपस्तंभ म्हणून नावलौकिक मिळविला. वैदिक विद्वानांच्या सान्निध्यामुळे ते आर्य समाजाकडे आकृष्ट झाले. महर्षी दयानंद प्रतिपादित वेदार्थामुळे त्यांचे जीवनच पालटले. स्व.आचार्य शिवमुनिजी, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, प्रा.नरेंद्र शिंदे यांच्या प्रेरणेने हाळी गावात आर्य समाजाची स्थापना केली. ५-६ ग्रामस्थांना सोबत करून समाजाकरिता जागा घेतली.यासाठी आपले कुटुंबीय व नातेवाईकांकडून निधी जमविला. या आर्य समाजाने आज एक क्रियाशील संस्था म्हणून चांगलेच रूप धारण केले आहे. सामाजिक योगदानाबरोबरच एक कर्तापुरूष म्हणून त्यांनी कुटुंबाला आर्थिक व वैचारिक दृष्टीने नेहमीच आधार दिला. घरातील सर्व धार्मिक विधी होम हवनानेच होत असत. आध्यात्मिक ग्रंथाच्या स्वाध्याचा छंद त्यांनी मोठ्या श्रद्धेने जोपासला. वयाच्या ८० व्या वर्षी देखील दर्शन ग्रंथ अभ्यासण्यास ते उत्सुक होते.

त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. सर्वश्री पं.नरेंद्र शिंदे, पं.नयनकुमार आचार्य,पं.प्रतापसिंह चौहान,विज्ञानमुनिजी, पं.प्रमोद शास्त्री आदीनीं हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी गांवातील आर्य कार्यकर्ते व प्रतिष्ठित नागरिक मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

वरील दिवगंतांना प्रांतीय सभेची भावपूर्ण श्रद्धाजंली ! सभा त्यांच्या दुःखात सहभागी आहे.

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

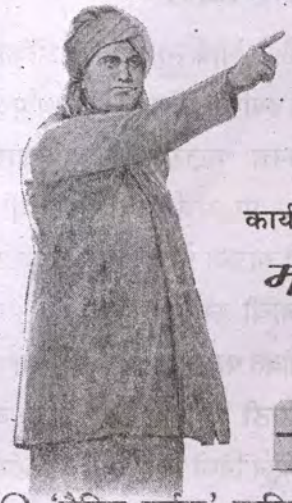

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.इ/टी.इ. (७)९६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

आर्य समाज सोलापूर में ऋषिबोधपर्व पर व्याख्यान देते हुए प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शिंदे । साथ में हैं वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री ।

भालकी में आयोजित मानवता कन्या संस्कार शिविर में कवयित्री श्रीमती इंदूमती सुतार का सम्मान करते हुए संयोजिका । मंच पर हैं आर्य वैज्ञानिक डॉ. श्री बी.एम.मेहेत्रे

आर्य समाज, निघवा (बा.) ता.हदगांव के नये भवन का शिलान्यास करते हुए प्रधान श्री शामसुंदर कदम । साथ में हैं आर्य समाज के पदाधिकारी एवं अन्य कार्यकर्त्तागण।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा, सेहत के प्रति जागरुकता, शुध्दता एवं गुणवत्ता, करोंडों परिवारों का विश्वास, यह है एम.डी.एच.का इतिहास जो पिछले ९० वर्षों से हर कसौटी पर खरे उतरे हैं -जिनका कोई विकल्प नहीं। जी हां यही हैं आपकी सेहत के रखवाले -

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

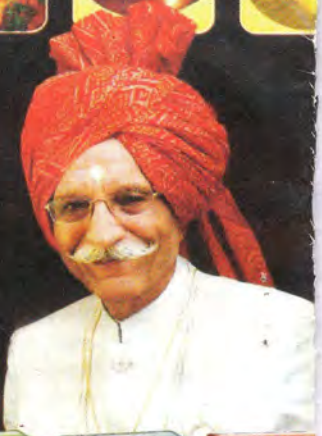

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

ESTD. 1919

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015.
Ph. : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-1

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम् ।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट